सूरजगढ़ उपखण्ड में सामाजिक आर्थिक विकास का स्तर-एक अध्ययन

शोधपत्र-भूगोल

* डॉ. नरेन्द्र कुमार ** डॉ. तबस्सुम सैय्यद*** डॉ. हरिओम

किसी भी क्षेत्र का विकास उसकी आर्थिक स्थिति पर परिचायक माना जाता हैं विश्व मे विकसित राष्ट्र प्रत्येक क्षेत्र में अग्रिम माने जाते है। जबकि विकासशीन देशों की अर्थव्यवस्था अस्थिर मानी जाती हैं कदम–कदम पर उन्हें दूसरे देशो से आर्थिक सहायता व तकनीकी ज्ञान के लिए निर्भर रहना पडता है। भौगोलिक सन्दर्भ मे आर्थि विकास का अर्थ, मानव एवं प्रकृति के मध्य प्रारम्भिक अन्तसंम्बधों से लेकर वर्तमान अन्तसंम्बधो तक लिया जा सकता है। आर्थिक विकास में प्रत्येक स्तर पर (चाहे वह महाद्वीपीय हो या राष्ट्रीय, प्रादेशिक हो या क्षेत्रिय) विषमता पायी जाती है। भारत में स्वतंत्रता के पश्चात विकास वृद्धि के साथ–साथ क्षेत्रिय विषमता भी बढी है। पिछडे क्षेत्रो को विकसित, समृद्ध क्षेत्रो की तुलना में नियोजित विकास का कम लाभ मिल पाया है। परिणाम स्वरूप देश में सभी क्षेत्रो में समानता के स्थान पर क्षेत्रिय असमानताऐं दृष्टिगोचर होती है। यह सामान्य अवधारणा है कि यदि किसी पिछडे एव अविकसित क्षेत्रो का विकास करना है। तो उन कारकों की खोज करनी चाहिए जिनके कारण विकास की प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न हुआ है (जानसन, 1968)।

उद्देश्य :– प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य इसी परिप्रेक्ष्य मे राजस्थान के झुन्झुनू जिले में स्थित सूरजगढ उपखण्ड के सामाजिक–आर्थिक विकास स्तर के मापन एवं लगभग समान विकास स्तर वाले क्षेत्रो के निर्धारण का एक प्रयास मात्र है। जिससे पिछडे क्षेत्रो की पहचान करके उनके समग्र विकास हेतु एक नियोजित विकास प्रारूप प्रस्तुत किया जा सके। किसी क्षेत्र के बहुस्तरीय विकास के मापन हेतु अनेक विधियों का प्रयोग किया जा सकता हैं जैसे श्रीवास्तव 1973 ने इस सन्दर्भ में प्रदेशों के आर्थिक स्वास्थ्य, कृषि क्षमता, जनसंख्या सम्भान्यता जैसे तत्वों का प्रयोग प्रादेशिक स्तरीकरण उभारने कि लिए किया है। एक ऐसा ही प्रयास प्रसाद (1981) द्वारा किया गया है। जिसके जनसंसाधन, कृषि उद्योग एवं अवस्थापनातमक तत्वों के आधार पर विकसित एवं अविकसित प्रदेशों का सीमांकन किया है। इस के बाद बिजेन्द्र सिंह (1998) कृषिगत, औद्योगिक, शिक्षा, स्वास्थ्य जनाकिकी, अवस्थापनात्मक चरों को आधार मानकर मध्य प्रदेशों में आर्थिक विकास स्तर का भूवैन्यासिक प्रतिरूप दिखाने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन क्षेत्रः–अध्ययन क्षेत्र राजस्थान राज्य मे (झुन्झुनू) जिले के सूरजगढ उपखण्ड उत्तर–पूर्व में फैला है। जिसका अक्षांशीय विस्तार $28^{o}10'$ से $28^{o}35'$ उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार $75^{o}30'$ पूर्वी से $75^{o}55'$ पूर्वी देशान्तर है। 2001 की जनगणना के अनुसार यहां की कुल जनसंख्या 217201 तथा सम्पुर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल 806.66 वर्ग किलो मीटर है। जनसंख्या घनत्व का प्रति वर्ग किमी 181 है। सूरजगढ उपखण्ड की साक्षरता दर 48.20 प्रतिशत है। यहां सिंचित भूमि का क्षेत्रफल कुल कृषि योग्य क्षेत्रफल का 42.85 प्रतिशत है। जो कृषि योग्य क्षेत्रफल का 65.31 प्रतिशत है। सूरजगढ उपखण्ड में अरावली की पहाडिया भी स्थित है। यहां का अधिकतम तापमान 48^{o} सेन्टीग्रेट व न्यूनतम तापमान जमाव बिन्दु तक रहता है। औसत वर्षा 411 मिमी है। प्रस्तुत शोध पत्र में उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर सूरजगढ उपखण्ड के सामाजिक–आर्थिक विकास के स्तरीकरण को अनेक चरों के समिश्रित स्वरूप के आधार पर ज्ञात किया गया है। जो निम्नवत् है :–

(अ.) सामाजिक स्तर–(1) शिक्षा सुविधा से युक्त ग्रामों का प्रतिशत (2) शिक्षा सुविधा पाने वाले ग्रामिण लोग का प्रतिशत (3) पीने के पानी की सुविधा से युक्त ग्रामिण लोग प्रतिशत (4) पीने के पानी की सुविधा पाने वाले गावो का प्रतिशत (5) स्वास्थ्य सुविधा से युक्त ग्रामों का प्रतिशत (6) स्वास्थ्य सुविधा पाने वाले ग्रामिणों का प्रतिशत (7) डाक तार सुविधा वाले गांवो का प्रतिशत (8) डाक तार पाने वाले लोगो का प्रतिशत (9) संचार सुविधा पाने वाले गांवो का प्रतिशत (10) संचार सुविधा पाने वाले लोगो का प्रतिशत (11) बिजली की सुविधा पाने वाले ग्रामो का प्रतिशत

*-**-*** भूगोल विभाग- आर.के.जे.के बरासिया स्नातकोत्तर कॉलेज, सूरजगढ़ झुन्झुनू (राज.)

(ब) आर्थिक स्तर – (13) मुख्य काम करने वालों में पुरुष कृषकों का प्रतिशत (14) मुख्य काम करने वालों में महिला कृषकों का प्रतिशत (15) पारिवारिक उद्योगो में पुरुष कार्यकर्ता का प्रतिशत (16) पारिवारिक उद्योग में महिला कार्यकता प्रतिशत (17) अन्य कार्य करने वाले वाले पुरुषो का प्रतिशत (18) अन्य कार्य करने वाली महिलाओं का प्रतिशत (19) कुल बोया गया क्षेत्र (20) कुल कृषिगत क्षेत्र में सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत (21) नलकुप द्वारा सिंचित भुमि का प्रतिशत (22) कृषि की दृष्टि से बजंर भूमि का प्रतिशत (23) जंगलात का प्रतिशत (24) दाल के उत्पादन क्षेत्र का प्रतिशत (25)तेल बीज के उत्पादन क्षेत्र के उत्पादन क्षेत्र का प्रतिशत (26) अन्य फसलों के उत्पादन क्षेत्र का प्रतिशत (27) कार्य करने वाले पशुओं का घनत्व (28) पशुओं का घनत्व (29) भैंसो का घनत्व (30) भेडो का घनत्व (31) बकरी का घनत्व (32) प्रत्येक 1000 जनसंख्या पर कार एवं जीप संख्या (33) प्रति 1000 जनसंख्या पर मोटर साईकिल , स्कुटर की संख्या (34) प्रति 1000 एकड कृषि क्षेत्र में टेक्टरों की संख्या (35) प्रति एक कृषकों के पास टैक्टरों की संख्या

आकड़ो के स्रोत एवं विधि तन्त्र–यह अध्ययन प्राथमिक आकडों पर आधारित है अतः उपरोक्त सूचकों से सम्बन्धित आकडों को विभिन्न स्रोतो से प्राप्त कर उन्हें पंचायत समिति अनुसार तालिका बद्ध किया गया है। प्रत्येक सूचक के आधार पर सभी पंचायत समिति का मध्य सभी सूचकों से सम्बन्धित प्रत्येक पंचायत समिति का मानक मान निकाला जाता है।

सुत्रः– जनपद का सूचकांक – माध्य (सभी जनपदों का)

मानक मान = प्रमाप विचलन

प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक आर्थिक विकास को मानक के आधार पर सूरजगढ उपखण्ड को तीन भागो में बॉटा गया है। उच्च विकसीत क्षेत्र(80 से अधिक), मध्यम क्षेत्र (–0.3 से 0.8 तक), निम्न विकसीत क्षेत्र (–0.3 से कम)

TABLE-1 SURAJGARH BLOCK - LEVEL OF SOCIAL & ECONOMIC DEVELPMENT

S.NO.	STANDARD VALUE	LEVEL OF DEVELOPMENT	NO. OF PANCHAYAT SAMITI
1.	80 AND MORE	HIGH DEVELOPMENT	= 4
2.	0.3 TO + .80	MODERAT EDEVELOPMENT	= 6
3.	LESS THEN - 3	LOW DEVELOPMENT	= 4

सामाजिक एवं आर्थिक विकास स्तर में क्षेत्रिय विषमता :–प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत विवेचित विधि द्वारा निकाले गये सामाजिक आर्थिक विकास के संयुक्त मानक मान से स्पष्ट होता है कि सूरजगढ उपखण्ड के सामाजिक–आर्थिक विकास स्तर में काफी भिन्नता है। दक्षिणी भाग की तुलना में उत्तरी–पश्चिमी भाग अधिक विकसित है। सूरजगढ उपखण्ड के सामाजिक–आर्थिक विकास का सवार्धिक मानक मान काजडा पंचायत समिति (+1.32) मे पाया जाता है जबकि पालोदा पंचायत समिति (– 0.66) न्युनतम गुणांक मान का प्रतिनिधित्व करते है। अध्ययन के क्षेत्र के 27.57 % भाग में सामाजिक–आर्थिक विकास औसत से अधिक तथा 56.14 % भाग में सामाजिक–आर्थिक विकास औसत से कम हुआ है। जो कि सूरजगढ उपखण्ड का क्रमशः 20.35 % एवं 55.20 % क्षेत्रफल को घेरे हुए है।

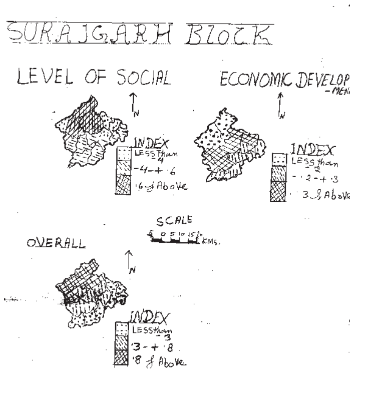

उच्च विकसित क्षेत्र :– सामाजिक–आर्थिक का + 80 से अधिक मानक मान रखने वाले पंचायत समिति इस श्रेणी में आती है। जो कि सूरजगढ उपखण्ड का 21.34% क्षेत्रफल एवं लगभग 26.40 प्रतिशत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है। सूरजगढ उपखण्ड में इस श्रेणी में शामिल पंचायत समितियों की संख्या मात्रा 4 है। काजडा (1.32) बलोदा (1.02) गोपालपुरा (0. 86) और रधुनाथपुरा (0.83)। इस श्रेणी की पंचायत समितियां कृर्षि की अधिकता, परिवहन, सुलभता लघु उद्योग के विकास के कारण है। सूरजगढ जिले की औसत साक्षरता दर (36.01) प्रतिशत से अधिक साक्षरता इन पंचायत समितियों में पायी जाती है। यथा– काजडा(47.2 प्रतिशत) बलोदा (30.6 प्रतिशत) गोपालपुरा (51.2 प्रतिशत) और रध

ुनाथपुरा (48.2 प्रतिशत)। स्त्रियों में भी साक्षरता औसत दर 17.2 प्रतिशत से अधिक 24.20 प्रतिशत, 11.2 प्रतिशत, 30. 90 प्रतिशत, 28.00 प्रतिशत है। स्त्रियों और पुरुषों दोनो में अधिक साक्षरता पाने के कारण इस क्षेत्र के लोग स्वभावतः नगरो में अधिक है। कृषि क्षेत्र में भी इनमें अध्ययन क्षेत्र के औसत कृषि क्षेत्र (60.33 प्रतिशत) से अधिक है। यथा काजडा (76.10 प्रतिशत) बलौदा (61.33 प्रतिशत) गोपालपुरा (70.11 प्रतिशत) रघुनाथपुरा (76.20 प्रतिशत) कृषि क्षेत्रफल पाया जाता है।

Table -2 Table Showing the Scores of Socio-Economic Development

S.No.	Panchyat Samiti	Social	Economic	Overall
1.	रघुनानथपुरा	+1.50	-0.60	+0.81
2.	गोपालपुरा	+1.55	-0.65	+0.86
3.	काजडा	+0.83	+0.48	+1.32
4.	बेरला	+0.23	-0.47	-0.24
5.	बिजौली का बास	-0.33	+0.21	-0.11
6.	पिलोद	+1.33	+0.66	-0.56
7.	बलोदा	+0.31	+0.67	+1.01
8.	काकोडा	-0.06	-0.02	-0.08
9.	अंगवाना	-0.08	+0.32	+0.22
10.	बडबर	+0.40	-0.05	+0.32
11.	खानपुर	-0.56	-0.56	+1.12
12.	फर्ट	-0.61	-0.56	-1.27
13.	कासनी	-0.75	-0.28	-1.08
14.	बालासर	-0.32	+0.01	-0.28

स्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण

मध्यम विकसित क्षेत्र :–सूरजगढ उपखण्ढ का सामाजिक–आर्थिक विकास का मध्यम स्तर (–0.3 से +0. 8) बडबर (+0.32), अंगवाना (+0.22), बिजोली बास (–0.11) , बेरला (–0.24), बालासर (–0.28), काकोडा (–0.08) पंचायत समिति में पाया जाता है। जो कि सूरजगढ उपखण्ड का 45.21 प्रतिशत क्षेत्रफल तथा लगभग 42.07 प्रतिशत जनसंख्या प्रतिनिधित्व करता है। यह क्षेत्र की उच्च विकास क्षेत्र के समीपस्थ लगभग समानान्तर विस्तृत है। शिक्षा, नगरीकरण की प्रवृति, अवस्था पनात्मक तत्वों का विकास, परिवहन, साधनों के विस्तार ने विकास को प्रभावित किया है।

अल्प विकसित क्षेत्र :–सूरजगढ उपखण्ड का सामाजिक–आर्थिक विकास निम्नतम स्तर स्तर (–0.3 से कम) पिलोद (0.65), कासनी (–1.48), खानपुरा(1.12), फरट(–1.27), पंचायत समिति में पाया जातां है जो कि उपखण्ड का 30.27 प्रतिशत क्षेत्रफल तथा लगभग 27.20 प्रतिशत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है।

निष्कर्ष :–सांख्यिकीय आंकडों के आधार पर निकाले गये निष्कर्ष से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी भाग की तुलना में पश्चिमी भाग अधिक विकसित है। पूर्वी भाग का विकास निम्न स्तर का है। उपरोक्त आंकलन क्षेत्र की विधि समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करता है।

विकास हेतु सुझावः–सूरजगढ उपखण्ड के अविकसित क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक नियोजन के उपायों से विकास के स्तर को उचा उठाया जाये यथा (1) शिक्षा को अनिवार्यता प्रदान कर स्वावलंबन को प्रोत्साहित किया जाए तथा महिला साक्षरता को बढावा दिया जाए। (2) जनसंख्या नियंत्रण निति के परिपालन हेतु गरीबों को पैसो के लालच में न लाकर उन्हें सही राय दी जाए। (3) कृषि कार्यो में दक्ष भुमि विहिन कृषकों को भेदभाव होकर ग्राम समाज द्वारा अतिरिक्त भूमि उपलब्ध करवायी जायें। (4) बन्धुबा मजदुरी समाप्त की जाए तथा उनको रोजगार का विकल्प दिया जाए। (5) आधुनिक कृषि यंत्रों व सिंचाई के साधनों अधिकतम एवं अनुकुलतम विकास किया जाए। (6) अध्ययन क्षेत्र में नये–नयें उद्योगों की स्थापना करके क्षेत्र का उद्योगिक विकास किया जाए।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1- jhonson, e.a-j (1965) - market towns and spatiat development in india, new delhi (n.c.a.e.r.) 2- jhonson, e.a-j (1970)- the organisation of space in development countries, haward university paress. cambridge. p. 207 to 208. 3- shrivasta (v.k.) (1973) habitat and economy in the upper son basln (u.b.b.p,pp - 167-75-78) 4- singh r.l. (1987) spatial planning in indian pespective n.g.s. 5- की उत्तर भारत भूगोल पत्रिका P- 58 TO 62 .